International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN:2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 04(I), October-December, 2026, pp. 39-44

21वीं सदी के शैक्षिक प्रतिमानः कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जलवायु संकट और नव–सामाजिक अनुबंध

डॉ. धर्म पाल*

सहायक आचार्य, इतिहास, श्रीमती नर्बदा देवी बिहानी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नोहर(हनुमानगढ़)।

*Corresponding Author: dharmpalswami683@gmail.com

Citation: पाल, धर्म (2026). 21वीं सदी के शैक्षिक प्रतिमानः कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जलवायु संकट और नव–सामाजिक अनुबंध. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(04(I)), 39–44. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.4(I).9643

सार

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य मानवीय इतिहास के सबसे जटिल और परिवर्तनकारी दौर से गुजर रहा है। एक ओर जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता और तकनीकी स्वचालन मानव जीवन के हर पहलू को पुनर्परिभाषित कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर जलवायु संकट, जैव विविधता का क्षरण और गहरी होती सामाजिक–आर्थिक असमानताएं हमारे अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न कर रही हैं। इन अभूतपूर्व चुनौतियों के समाधान हेतु वैश्विक शिक्षा प्रणालियों में एक बुनियादी और आमूलचूल बदलाव की आवश्यकता है। यह विस्तृत शोध पत्र इस बात का गहन और बहुआयामी विश्लेषण करता है कि 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा को कैसे पुनर्गठित किया जाए। अध्ययन मुख्य रूप से यूनेस्को द्वारा प्रस्तावित श्नव–सामाजिक अनुबंधश्, भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षा में मानवकेंद्रित तकनीकी एकीकरण पर केंद्रित है। अनुसंधान यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भविष्य की शिक्षा को पारंपरिक रटंत विद्या और शिक्षक–केंद्रित दृष्टिकोण से हटकर अनुभवजन्य, योग्यता–आधारित और पूरी तरह से छात्र–केंद्रित होना चाहिए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता शिक्षा के क्षेत्र में असीमित अवसर प्रदान करती हैय हालाँकि, इसका अनियंत्रित उपयोग छात्रों में संज्ञानात्मक निर्भरता को बढ़ावा दे सकता है, इसलिए एक नैतिक और मानवकेंद्रित रूपरेखा का क्रियान्वयन अपरिहार्य है। इसके अतिरिक्त, वैश्विक स्तर पर योग्य शिक्षकों की भारी कमीकृजो कि वर्ष 2030 तक 44 मिलियन तक पहुँचने का अनुमान है एक ऐसा ढांचागत संकट है जिसका समाधान किए बिना किसी भी शैक्षिक सुधार की कल्पना निरर्थक है। यह पत्र निष्कर्ष निकालता है कि एक न्यायसंगत, समावेशी और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ भविष्य के निर्माण के लिए शिक्षा में भारी वैश्विक निवेश और सहयोग की आवश्यकता है।

शब्दकोशः *शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जलवायु संकट, नव–सामाजिक अनुबंध, अनुभवजन्य अधिगम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मानवकेंद्रित दृष्टिकोण, समावेशिता, वैश्विक शिक्षक संकट, बहु–विषयक शिक्षा।*

प्रस्तावना

मानवता और हमारा ग्रह पृथ्वी वर्तमान में एक ऐसे ऐतिहासिक चौराहे पर खड़े हैं जहाँ हमारे द्वारा लिए गए निर्णय आगामी सदियों का भविष्य तय करेंगे। बढ़ती सामाजिक और आर्थिक असमानता, जलवायु परिवर्तन का भयानक रूप, संसाधनों का अंधाधुंध दोहन, लोकतांत्रिक मूल्यों में गिरावट और तीव्र तकनीकी स्वचालन हमारे वर्तमान युग की प्रमुख विशेषताएं बन गई हैं। इन अंतर्संबंधित और जटिल संकटों का समाधान पारंपरिक सोच

Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.

और पुरानी संस्थागत संरचनाओं से संभव नहीं है। इसके लिए वैश्विक शिक्षा प्रणालियों में एक ऐसे परिवर्तनकारी दृष्टिकोण की तत्काल आवश्यकता है जो मानव चेतना को एक नए स्तर पर ले जा सके।

यूनेस्को की 'भविष्य की शिक्षा' रिपोर्ट स्पष्ट रूप से चेतावनी देती है कि हमें या तो एक अस्थिर मार्ग पर चलते रहना होगा या फिर अपनी दिशा पूरी तरह से बदलनी होगी। इस दिशा परिवर्तन के लिए शिक्षा हेतु एक 'नव–सामाजिक अनुबंध' की आवश्यकता है, जो आजीवन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, मानवाधिकारों, समावेशिता और वैश्विक एकजुटता पर गहराई से आधारित हो। ऐतिहासिक रूप से, शिक्षा प्रणालियों को औद्योगिक क्रांति की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु डिजाइन किया गया था, जहाँ मुख्य ध्यान मानकीकृत उत्पादन और आज्ञापालन पर था। परंतु, 21वीं सदी की शिक्षा केवल बौद्धिक उत्तेजना या आर्थिक उत्पादन तक सीमित नहीं रह सकतीय इसे संपूर्ण मानव व्यक्तित्व, चरित्र, और सार्वभौमिक मूल्यों के निर्माण पर केंद्रित होना चाहिए।

आज की शिक्षा को भविष्य की कार्यस्थलों की अनिश्चित और बदलती प्रकृति के अनुसार नवीन कौशल विकसित करने चाहिए। इसके लिए नितांत आवश्यक है कि पारंपरिक शिक्षक–केंद्रित और विषय–वस्तु को रटने वाली विधियों को त्यागकर सहयोगात्मक, पारिस्थितिक, और बहु–विषयक अधिगम को अपनाया जाए। इस शोध पत्र का मूल उद्देश्य इन्हीं उभरते प्रतिमानों का एक विस्तृत और आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

शोध उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- बदलती दुनिया और वैश्विक संकटों के संदर्भ में शिक्षा के लिए यूनेस्को द्वारा प्रस्तावित 'नव–सामाजिक अनुबंध' की वैचारिक पृष्ठभूमि और इसके व्यावहारिक निहितार्थों का गहन मूल्यांकन करना।
- भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में 21वीं सदी के कौशल विकास में अनुभवजन्य शिक्षा, बहु–विषयक दृष्टिकोण और सामाजिक–भावनात्मक अधिगम की भूमिका का विस्तृत विश्लेषण करना।
- शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के एकीकरण से उत्पन्न होने वाले दोहरे प्रभावों विशेष रूप से यूनेस्को के मानवकेंद्रित योग्यता ढांचे और छात्रों की आलोचनात्मक सोच पर पड़ने वाले नकारात्मक संज्ञानात्मक प्रभावों की आलोचनात्मक जांच करना।
- वैश्विक जलवायु संकट के समाधान और पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए 'हरित शिक्षा' को मुख्यधारा के पाठ्यक्रम में शामिल करने की अनिवार्यता को समझना।
- वर्ष 2030 तक वैश्विक शिक्षक संकट के कारणों, इसके दूरगामी प्रभावों की पहचान करना और शिक्षकों के सशक्तिकरण हेतु ठोस समाधान प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि

यह शोध गुणात्मक और विश्लेषणात्मक अनुसंधान प्रविधि पर आधारित है। विषय की व्यापकता को देखते हुए, इसमें द्वितीयक आंकड़ों, वैश्विक संधियों और समकालीन शैक्षिक साहित्य की विस्तृत समीक्षा की गई है। अध्ययन के लिए प्रमुख वैश्विक संस्थानों जैसे यूनेस्को, आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) की नवीनतम रिपोर्टों का उपयोग किया गया है। विशेष रूप से यूनेस्को की 2021 की रिपोर्ट श्भविष्य की शिक्षाश, 2024 का 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता योग्यता ढांचा', तथा भारत सरकार की 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के मूल दस्तावेजों का गहन विश्लेषण किया गया है। प्राप्त गुणात्मक आंकड़ों का उपयोग करके विभिन्न शैक्षिक प्रतिमानों, तकनीकी चुनौतियों और वैश्विक नीतियों का एक तार्किक, आलोचनात्मक और तुलनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

विषयगत विश्लेषण और प्रमुख शैक्षिक प्रवृत्तियां

- **शिक्षा के लिए नव–सामाजिक अनुबंधः एक वैचारिक क्रांति**

वर्तमान वैश्विक चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए यूनेस्को ने शिक्षा को एक साझा सामाजिक प्रयास और सार्वजनिक भलाई के रूप में पुनः स्थापित करने का ऐतिहासिक आह्वान किया है। यह

श्नव–सामाजिक अनुबंधश किसी भी प्रकार के भेदभाव, हाशिए पर जाने की प्रवृत्ति और सामाजिक बहिष्कार को जड़ से दूर करने पर केंद्रित है। इसके तहत शिक्षण विधियों को व्यक्तिगत उपलब्धि और अंधी प्रतिस्पर्धा पर केंद्रित होने के बजाय सहयोग, एकजुटता और सामूहिक उत्तरदायित्व पर जोर देना चाहिए।

इस नए अनुबंध के मूल सिद्धांतों में ज्ञान तक निर्बाध पहुँच, सांस्कृतिक विविधता का असीम सम्मान और वैज्ञानिक प्रगति में योगदान करने का सार्वभौमिक अधिकार शामिल है। यह अनुबंध इस बात पर भी बल देता है कि पाठ्यक्रम को केवल अलग–अलग विषयों के एक ग्रिड के रूप में व्यवस्थित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि इसे पारिस्थितिक, अंतर–सांस्कृतिक और बहु–विषयक अधिगम में परिवर्तित किया जाना चाहिए। ज्ञान के सामूहिक भंडार (जिसे पूरी मानवता ने पीढ़ियों से संचित किया है) तक पहुँच को एक बुनियादी मानवाधिकार माना गया है। इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों को इस नए अनुबंध के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभानी होगी, ताकि अनुसंधान और विज्ञान की प्रगति को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाया जा सके।

- **कृत्रिम बुद्धिमत्ताः शिक्षा में असीम संभावनाएं और नैतिक चुनौतियाँ**

21वीं सदी की शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रवेश एक ऐसी क्रांति है जो शिक्षण और अधिगम के पारंपरिक स्वरूप को पूरी तरह से बदल रही है। यह तकनीक व्यक्तिगत अधिगम, तत्काल मूल्यांकन और शिक्षा की सुलभता के अभूतपूर्व अवसर प्रदान करती है। इस दिशा में दिशा–निर्देश प्रदान करने हेतु, यूनेस्को ने वर्ष 2024 में छात्रों के लिए अपनी तरह का पहला 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता योग्यता ढांचा' जारी किया है। इस ढांचे का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जिम्मेदार उपयोगकर्ता और सह–निर्माता के रूप में तैयार करना है।

यह ढांचा चार प्रमुख आयामों पर आधारित हैरू मानवकेंद्रित दृष्टिकोण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता, तकनीक और इसके अनुप्रयोग, तथा प्रणाली डिजाइन। इन चार आयामों के अंतर्गत कुल 12 प्रमुख दक्षताओं को रेखांकित किया गया है, जिन्हें तीन प्रगति स्तरों को समझना, लागू करना और निर्माण करनाकृमें विभाजित किया गया है। इसका लक्ष्य छात्रों में ऐसे मूल्य और ज्ञान विकसित करना है जिससे वे इस तकनीक को उसके नैतिक, सामाजिक और तकनीकी पहलुओं के साथ समग्र रूप से समझ सकें।

हालाँकि, इस तकनीकी एकीकरण का एक दूसरा और चिंताजनक पहलू भी है। विभिन्न नवीन अध्ययनों से यह बात सामने आई है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरणों (विशेषकर जनरेटिव मॉडल) पर अत्यधिक निर्भरता के कारण छात्रों की आलोचनात्मक सोच और स्वतंत्र समस्या–समाधान क्षमता में भारी गिरावट आ रही है। सूचनाओं के तत्काल उपलब्ध होने से छात्रों में 'संज्ञानात्मक निष्क्रियता' विकसित हो रही है, जहाँ वे अपने स्वयं के मस्तिष्क का उपयोग करने के बजाय मशीन पर निर्भर हो जाते हैं। इसलिए, यूनेस्को का ढांचा इस बात पर विशेष बल देता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग मानव क्षमताओं के विकास में सहायक होना चाहिए, न कि मानवीय गरिमा और निर्णय लेने की क्षमता (एजेंसी) को प्रतिस्थापित करने वाला।

- **अनुभवजन्य अधिगम और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) शिक्षा के क्षेत्र में एक अत्यंत प्रगतिशील और दूरदर्शी कदम है, जो पूरी तरह से 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए छात्रों को तैयार करने पर केंद्रित है। यह नीति स्पष्ट रूप से घोषणा करती है कि शिक्षा को केवल परीक्षा–उन्मुख परिणामों और रटने की प्रवृत्ति तक सीमित नहीं रखा जा सकता। इसके स्थान पर, यह आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, समस्या–समाधान कौशल और डिजिटल साक्षरता के विकास पर अत्यधिक बल देती है।

नीति यह अनिवार्य करती है कि शिक्षण शास्त्र को अधिक अनुभवजन्य, समग्र, एकीकृत, खोज–उन्मुख और आनंददायक होना चाहिए। इसमें कला, मानविकी, खेल, भाषा और व्यावसायिक विषयों को विज्ञान और गणित के साथ समान महत्व दिया गया है। अनुभवजन्य अधिगम के अंतर्गत छात्रों को केवल निष्क्रिय श्रोता

बनकर नहीं रहना है, बल्कि उन्हें वास्तविक दुनिया की समस्याओं को सुलझाने के लिए परियोजना–आधारित अधिगम में सक्रिय रूप से भाग लेना है। यह दृष्टिकोण न केवल छात्रों के बीच तार्किक क्षमता को बढ़ाता है बल्कि उन्हें सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक जीवन में लागू करने की समझ भी प्रदान करता है।

- **जलवायु संकट और हरित शिक्षा की अनिवार्यता**

जैसे–जैसे पृथ्वी अपने ग्रहीय सीमाओं को पार कर रही है, जलवायु संकट का समाधान शिक्षा का एक अनिवार्य अंग बन गया है। यूनेस्को के अनुसार, शिक्षा को केवल जलवायु विज्ञान के सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि यह पर्यावरणीय स्थिरता के लिए एक सक्रिय उपकरण होनी चाहिए। 'हरित शिक्षा' की अवधारणा इसी विचार पर आधारित है।

हरित शिक्षा का उद्देश्य छात्रों में जलवायु साक्षरता विकसित करना है, जिससे वे न केवल पर्यावरण पर मानवीय गतिविधियों के प्रभावों को समझें, बल्कि जलवायु अनुकूलन और शमन के लिए नवीन समाधान भी खोज सकें। वैश्विक पहलों का लक्ष्य वर्ष 2030 तक दुनिया भर के सभी देशों के मुख्य पाठ्यक्रम में जलवायु परिवर्तन शिक्षा को अनिवार्य रूप से शामिल करना है। पर्यावरण–विद्यालयों (इको–स्कूल्स) की स्थापना और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ा परियोजना–आधारित अधिगम छात्रों को प्रकृति के साथ सद्भाव में रहना सिखाता है।

- **सामाजिक–भावनात्मक अधिगम का गहरा प्रभाव**

आधुनिक, अत्यंत जटिल और तकनीकी रूप से संचालित दुनिया में सामाजिक–भावनात्मक अधिगम का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए भावनात्मक और नैतिक मूल्यों के विकास पर बल देती है। यह अपनी भावनाओं को प्रबंधित करने, तनाव को नियंत्रित करने, दूसरों के प्रति समानुभूति विकसित करने और समाज में स्वस्थ संबंध बनाने की एक निरंतर प्रक्रिया है।

शोध स्पष्ट रूप से बताते हैं कि जिन छात्रों में उच्च सामाजिक और भावनात्मक विनियमन होता है, उनके अकादमिक प्रदर्शन और भावी जीवन में सफल होने की संभावना कहीं अधिक होती है। 21वीं सदी की अनिश्चितताओं जैसे महामारियां, आर्थिक मंदी और तकनीकी उथल–पुथल से निपटने के लिए छात्रों को मानसिक रूप से अत्यधिक लचीला और मजबूत होना चाहिए। इसलिए, इसे केवल एक अतिरिक्त विषय के रूप में नहीं, बल्कि संपूर्ण शैक्षिक अनुभव के मूल में स्थापित किया जाना चाहिए।

- **वैश्विक शिक्षक संकट और ढांचागत चुनौतियाँ**

उपर्युक्त सभी आदर्श नीतियों, नवीन अनुबंधों और तकनीकी ढांचों को वास्तविकता में बदलने के मार्ग में सबसे बड़ी और सबसे गंभीर बाधा योग्य शिक्षकों की वैश्विक स्तर पर भारी कमी है। यूनेस्को के नवीनतम और चिंताजनक आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2030 तक सभी के लिए प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा सुनिश्चित करने के सतत विकास लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दुनिया को 44 मिलियन अतिरिक्त शिक्षकों की तत्काल आवश्यकता है।

यह संकट केवल विकासशील देशों तक सीमित नहीं है, बल्कि विकसित राष्ट्र भी शिक्षकों के नौकरी छोड़ने की उच्च दर से जूझ रहे हैं। इस गंभीर संकट के मुख्य कारणों में शिक्षकों को मिलने वाला अपर्याप्त वेतन, काम का असहनीय दबाव, गैर–शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्यों का भारी बोझ, और समाज में शिक्षक के पेशे को मिलने वाले सम्मान में कमी शामिल है। जब तक शिक्षकों को सशक्त नहीं किया जाएगा और शिक्षण पेशे को समाज के सबसे आकर्षक और सम्मानित पेशों में नहीं बदला जाएगा, तब तक शिक्षा का कोई भी नया प्रतिमान सफल नहीं हो सकता।

भविष्य के लिए विस्तृत सुझाव

बदलते वैश्विक परिदृश्य, भयंकर जलवायु संकट, और तकनीकी क्रांतियों को देखते हुए, शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए निम्नलिखित व्यापक सुझाव प्रस्तावित हैंः

शिक्षकों का पूर्ण सशक्तिकरण और कार्य–दशाओं में आमूलचूल सुधाररू वैश्विक शिक्षक संकट को हल करने के लिए सरकारों को तुरंत शिक्षकों के वेतन को अन्य उच्च पेशों के समकक्ष प्रतिस्पर्धी बनाना चाहिए। शिक्षकों को प्रशासनिक और लिपिकीय कार्यों के बोझ से पूरी तरह मुक्त किया जाना चाहिए ताकि वे अपना शत–प्रतिशत समय केवल शिक्षण और छात्रों के मार्गदर्शन में लगा सकें।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का नैतिक, संतुलित और मानवकेंद्रित उपयोगरू शिक्षा में तकनीकी एकीकरण करते समय यूनेस्को के 2024 के ढांचे को सख्ती से लागू किया जाना चाहिए। तकनीक का उपयोग शिक्षकों की सहायता और अधिगम को व्यक्तिगत बनाने के लिए होना चाहिए, न कि छात्रों की स्वतंत्र और आलोचनात्मक सोच को कुंद करने के लिए। स्कूलों में डिजिटल साक्षरता के साथ–साथ 'तकनीकी नैतिकता' का विषय अनिवार्य किया जाना चाहिए।

हरित शिक्षा और जलवायु साक्षरता का अनिवार्य समावेशरू जलवायु संकट से निपटने के लिए प्रत्येक राष्ट्र को अपने राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में जलवायु परिवर्तन शिक्षा को व्यावहारिक और क्रियात्मक रूप से शामिल करना चाहिए। स्कूलों को स्वयं ऊर्जा–कुशल और पर्यावरण–अनुकूल परिसरों में बदला जाना चाहिए ताकि छात्र प्रत्यक्ष रूप से स्थिरता का अनुभव कर सकें।

अनुभवजन्य और बहु–विषयक शिक्षा का जमीनी क्रियान्वयनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण को फाइलों से निकालकर वास्तविक कक्षाओं तक पहुँचाने के लिए मूल्यांकन प्रणाली में क्रांतिकारी बदलाव की आवश्यकता है। छात्रों का मूल्यांकन उनकी रटने की क्षमता पर नहीं, बल्कि उनके द्वारा किए गए वास्तविक परियोजनाओं, समस्या–समाधान क्षमता और रचनात्मकता के आधार पर किया जाना चाहिए।

वैश्विक एकजुटता और शिक्षा में भारी निवेशः 'नव–सामाजिक अनुबंध' की सफलता के लिए शिक्षा को बाजार की वस्तु मानने के बजाय इसे पूर्णतः एक वैश्विक 'सार्वजनिक भलाई' (पब्लिक गुड) माना जाना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और धनी राष्ट्रों को विकासशील देशों में शिक्षा के बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए भारी वित्तीय सहायता और बिना शर्त सहयोग प्रदान करना चाहिए।

निष्कर्ष

21वीं सदी में बदलती दुनिया के लिए शिक्षा को मात्र साक्षरता प्राप्त करने, संख्यात्मक ज्ञान हासिल करने या रोजगार पाने का साधन नहीं माना जा सकता। यह वर्तमान समाज की विसंगतियों को दूर करने, मंडराते जलवायु संकट का सफलतापूर्वक सामना करने, और अभूतपूर्व तकनीकी चुनौतियों से निपटने का सबसे सशक्त और एकमात्र हथियार है। इस विस्तृत शोध के परिणाम यह स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हैं कि भविष्य की शिक्षा को यूनेस्को के 'नव–सामाजिक अनुबंध' के तहत समावेशी, बहु–विषयक, अनुभवजन्य और मानवीय मूल्यों से ओत–प्रोत होना चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी युगांतरकारी तकनीकों का उपयोग मानवकेंद्रित दृष्टिकोण से और अत्यंत सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए, ताकि छात्रों की मौलिक और आलोचनात्मक सोच की क्षमता किसी भी रूप में क्षीण न हो। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वैश्विक शिक्षक संकट का समाधान किए बिना किसी भी शैक्षिक सुधार या नीति की कल्पना करना रेत पर महल बनाने के समान है। अंततः, मानवता के सुरक्षित और समृद्ध भविष्य के लिए यह अनिवार्य है कि विश्व के सभी देश, सरकारें, नागरिक समाज और शैक्षणिक संस्थान एकजुट होकर शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग और निवेश का एक नया अध्याय शुरू करें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय.
2. यूनेस्को. (2021). भविष्य की शिक्षाः एक नया सामाजिक अनुबंध. यूनेस्को प्रकाशन.
3. यूनेस्को. (2023). वैश्विक शिक्षक संकटः 44 मिलियन शिक्षकों की आवश्यकता. यूनेस्को रिपोर्ट.
4. यूनेस्को. (2024). छात्रों और शिक्षकों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता योग्यता ढांचा. यूनेस्को.
5. रहमान, ए., एवं अन्य. (2026). शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आलोचनात्मक सोच में गिरावटः एक अध्ययन. अंतरराष्ट्रीय शिक्षा शोध पत्रिका.
6. शर्मा, आर. (2023). सामाजिक और भावनात्मक अधिगम का महत्व. संस्कृति आईएएस अकादमिक लेख.
7. स्मिथ, जे. (2024). हरित शिक्षा और जलवायु परिवर्तन पाठ्यक्रम. वैश्विक पर्यावरण शिक्षा फाउंडेशन.

❑❑❑